CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शोध-पत्र

Received 11.02.2023 | Reviewed 07.03.2023 | Accepted 30.03.2023

प्रवासी विमर्श;सात समुंदर पार जाने की अनूठी दास्तान

* डॉ. प्रणु शुक्ला

मुख्य शब्द – *विश्व मानवता संचार क्रांति, छितराई प्रवासी मानवता, वैश्वीकरण आदि.*

विश्व एक विश्व ग्राम में परिवर्तित हो चुका है अब विश्व मानवता संचार क्रांति के कारण पहले से अधिक समीप होती जा रही है लोगों में नए सिरे से स्वयं की उद्गम भूमियों को खोजने की उत्कंठा तीव्रता से जाग रही है विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में छितराई प्रवासी मानवता में अस्मिता बोध करवट लेने लगा है। विस्थापित होने के बावजूद मानवता भावनात्मक स्तर पर अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहती है,, मातृभूमि के साथ नए सिरे से संबंध स्थापित करना चाहती है। वह अपना संपूर्ण अस्तित्व नए सिरे से खोजना चाहती है इसलिए विश्व के विभिन्न प्रवासी समाजों में अस्मिता को लेकर हलचल मची हुई है। साहित्य, कला, संस्कृति, संचार माध्यम, आर्थिक राजनायिक संबंध को लेकर नए विमर्श जन्म ले रहे हैं।

'एलियांस फ्लोया' के अनुसार "चूंकि वैश्वीकरण ने नए जीवन मूल्य को जन्म दिया है, इसलिए प्रवासी भारतीय समाज भी वह स्वीकृत भारत को नए संदर्भों के साथ खोजना और समझना चाहता है। इसके लिए आवश्यक है कि अपने प्रवासी भारतीयों के प्रति खुली दृष्टि अपनाएं, उनके प्रवासन की तत्कालीन परिस्थितियों और वर्तमान स्थिति को सही परिप्रेक्ष्य में रखें और समझें। आज प्रवासन या डायस्पोरा का प्राचीन रूप लगभग पूरी तरह से बदल चुका है।"1

यद्यपि यह सत्य है कि धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवासन के समानांतर व्यापारिक प्रवासन भी प्रचलित है। तत्कालीन युग में भारत के पूर्व एशिया मध्य एशिया पश्चिमी यूरोप जैसे क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं। कंबोडिया, थाईलैंड जावा, सुमात्रा, बाली, मलेशिया जैसे क्षेत्रों में इस श्रेणी के प्रवासी भारतीय रह रहे हैं। पूर्व औद्योगिक और पूर्व औपनिवेश कालों के इंडियन डायस्पोरा या प्रवासी भारतीय डायस्पोरा आधुनिक डायस्पोरा से नितांत भिन्न है। दोनों की विश्व दृष्टि या अलग-अलग भौतिक संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करती है।'जाना इवांस और अनिता मनुआर' ने कहा है कि""आरंभिक डायस्पोरा की दृष्टि सामंती महाजनी पूंजीवादी और गैर उपभोक्तावादी मूल्यों से बनी थी, इसके विपरीत आधुनिक डायस्पोरा की विश्व दृष्टि विकसित ओद्योगिक पूँजीवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति पर आधारित है। निस्सदेह विकसित और उन्नत उत्पादन साधन संचार क्रांति के साथ उच्च और तीव्र पूँजी गतिशीलता प्रवासियों की जीवन दृष्टियों

और जीवन शैलियों का रूप और प्रभाव निर्धारित करते हैं, इसलिए इक्कीसवी सदी के भारतीय प्रवासन या डायस्पोरा को मध्ययुगीन आँखों से देखने समझने को अवैज्ञानिकता ही कहा जाएगा। मेरा यह मत विभिन्न देशों अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, नीदरलैण्ड, सूरीनाम, गुयाना, मॉरीशस, इण्डोनेशिया, मलेशिया, तंजानिया, ओमान आदि में मौजूद प्रवासी भारतीयों के अवलोकन और अनुभव पर आधारित है।"2'

इन अनुभवों के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, भाषाई, प्रोद्यौगिकीय, आर्थिक, और राजनीतिक आयाम है जाहिर है इन आयामों का समकालीन राजनीतिक आर्थिक विमर्श से भी संबंध है कुछ समस्याएं हैं तो कुछ विसंगतियां। आइए प्रवासन की परिभाषा देखते हैं-

प्रवासन की परिभाषा - वास्तव में हिन्दी शब्द प्रवासन की तुलना में "डायस्पोरा" शब्द प्राचीन है। यह शब्द मूलतः ग्रीक० भाषा का है। शब्द शास्त्र की दृष्टि से डायस्पोरा या Diaspora को ग्रीक भाषा के Diaspora से लिया गया है। जो बना है Dia और sperian का । जिसका अर्थ है बीजो को बोना', छितराना या बिखेरना, फैलाना आदि। यह एक अंनत प्रक्रिया है। मूलत इस शब्द का प्रयोग ई. पू. 586 में यहूदियो के "बेबीलोनिया से निष्कासन " के सन्दर्भ में किया गया था। इस निष्कासन से यहूदी या यहूदी समाज फिलीस्तीन से बाहर विभिन्न क्षेत्रों में बिखर गया, चारों और छितर गया।"3

आधुनिक काल में यह शब्द यहूदी निष्कासन प्रवासन और विस्थापित तक ही सीमित नहीं रहा हैं बल्कि आज इस शब्द का प्रयोग विभिन्न देशों के मानव समूहों में विस्थापन, प्रवासन और पुनर्वासन के संसार को, रेखांकित करने के लिए किया जाता है। क्योंकि विगत ढाई हजार वर्षो में दुनिया में विभिन्न भागों में प्रवासन - विस्थापन और पुनर्वासन की ऐतिहासिक भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि के लोगों के अपने गृहस्थान या मूलस्थान से पलायन या निष्कासन और बाद में नई जीवन स्थितियों के वर्णन में प्रवासन शब्द का व्यापक अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

हिंदी शब्दकोशों में 'प्रवासी' का अर्थ प्राप्त होता है विदेशों में रहनेवाले भारतीय । परंतु अन्य भाषाओं में इस शब्द का अर्थ अलग है तथा प्रयोग भी। कुछ विद्वानों के मतानुसार हिंदी में इसका बहुत संकुचित अर्थ लिया जाता है।

व्यापक अर्थ में जो लेखन अपने घर से दूर हुआ हों यानी विदेश में वह प्रवासी साहित्य है। बॉक्यूबलरी डिक्शनरी में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है- "A diaspora is a large group of people with a similar heritage or homeland who have since moved out to places all over the world. अर्थात् प्रवासी ऐसे लोगों का एक बड़ा समूह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों स्थानांतरित हो गए हैं। "4

श्रीलंकन लेखक इंडीवारा तिलकरत्ने ने रांडे ऑब्जर्वर में लिखा था- "The word diaspora originates from the Greek word, diasporá meaning, a dispersion (scattering). Diaspora may be defined as dispersion of people, language, or culture that was formerly concentrated in one place. When an individual or group of people start producing

literary production about people or language they may have disinherited but writing in another language, they may be defined as diasporic literature." अर्थात् "diaspora शब्द ग्रीक diaspora से

उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ होता है- फैलाव (बिखराब) | diaspora शब्द की परिभाषा ऐसी हो सकती है, बिखरे ऐसे लोग जो पहले भाषा या संस्कृति के साथ के ही स्थान पर केन्द्रित थे। जब किसी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह ऐसे साहित्य का सर्जन करें, जिसे विरासत में उन्होंने खो दिया है, किन्तु अन्य भाषा में उसका सर्जन करें, उसे डायस्पोरिक साहित्य कहा जा सकता है। "5

A diaspora (from Greek "scattering, dispersion") is a scattered population whose origin lies within a smaller geographic locale. Diaspora can also refer to the movement of the population from its original homeland.Diaspora has come to refer particularly to historical mass dispersions of an involuntary nature."

अर्थात् "डायस्पोरा शब्द ग्रीक शब्द से विकसित हुआ है। जिसका अर्थ होता है- बिखरे हुए लोग। ऐसे लोग जिनका मूल एक छोटे भौगोलिक विस्तार में हो। डायस्पोरा ऐसे लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है जो अपनी मातृभूमि से अन्य स्थानों में स्थानांतरित होते हैं। डायस्पोरा अधिकतर ऐसे लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो किसी ऐतिहासिक घटना के कारण अनिच्छा से बिखर जाते हैं।"6

प्रवासी साहित्य एक स्वीकृत तथा लोकप्रिय अवधारणा है। इसकी पहचान डॉ. कमल किशोर गोयनका दो रूपों में करते हैं-

1. भारतवंशियों का साहित्य। भारतवंशियों के हिंदी साहित्य में मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों का साहित्य आता है, जिनका जन्म इन देशों में हुआ है और ये लेखक भारतभूमि और उसकी संस्कृति, धर्म, परंपराओं आदि से स्वयं को जोड़े हुए। ये दोनों धाराएं भिन्न होकर भी प्रवासी भारतीय संवेदना एवम् चेतना का व्यापक परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं।

2. प्रवासी भारतीयों का साहित्य प्रवासी साहित्य में अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, नार्वे, डेनमार्क आदि देशों में भारतीय प्रवासियों की पहली पीढ़ी का साहित्य आता है, जो बेहतर जीवन एवम् शिक्षा के लिए इन देशों में गए और अपने हिंदी प्रेम के कारण उसे अपनी अभिव्यक्ति की भाषा बनाया। वैसे प्रवासी साहित्य के सर्वेक्षण की दृष्टि से डॉ. गोयनका भारतेतर देशों को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित करते हैं-

1. गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिंदी साहित्य- जिसमें मॉरिशस, फिजी, गुयाना, दक्षिण

त्रिनिदाद एवम् दुवैगो आदि देश समाविष्ट होते हैं।

2. भारत के पड़ोसी देशों का हिंदी साहित्य- जिसमें नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार आदि देशों की गणना होती है। और

3. विश्व के अन्य महाद्वीपों का हिंदी साहित्य- इनमें निम्लिखित पाँच महाद्वीपों के देशों की गणना होती है। ये हैं- (अ) अमरिका महाद्वीप के ये देश अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा आदि। (आ) यूरोप महाद्वीप के देश रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, हॉलैंड, नीदरलैंड, नार्वे, डेनमार्क, आस्ट्रिया, स्विट्जरलैंड, स्वीडन, फिनलैंड, इटली, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, उक्रेन, क्रोशिया आदि। (इ) मध्यएशिया के देश- ईराक, ईरान, आबूधाबी, टर्की आदि मुसलिम देश (ई) एशिया महाद्वीप के देश चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड आदि और (उ) ऑस्ट्रेलिया"7

डॉ. शैलजा सक्सेना का मत है कि "भारत के बाहर लिखे जाने वाले साहित्य को भारतीय आलोचकों ने "प्रवासी साहित्य" का नाम दिया है। पर "प्रवासी साहित्य" शब्द भारत से बाहर रचे जा रहे सारे साहित्य को पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं करता। हर देश की जीवन शैली, राजनैतिक स्थितियाँ, सामाजिक संदर्भ अलग-अलग होते हैं, अतः वहाँ का साहित्य भी अलग ही होता है। यदि हम विदेशों में रचे जा रहे हिन्दी साहित्य की सही विवेचना करना चाहते हैं तो हमें इस साहित्य को देशों के आधार पर ही देखना चाहिये जैसे,

"कनाडा का हिन्दी साहित्य", "अमरीका का हिन्दी साहित्य", "इंग्लैंड का हिन्दी साहित्य "8

डॉ. रूप सिंह चंदेल के मतानुसार "पिछले कुछ वर्षों से विदेशों में बैठे हिन्दी रचनाकारों के लिए 'प्रवासी हिन्दी साहित्यकार और उनके साहित्य के लिए 'प्रवासी हिन्दी साहित्य का प्रयोग कुछ अधिक देखने-सुनने में आ रहा है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले कब और कहाँ हुआ और किसने किया? यह शोध का विषय है और यह भी शोध का विषय हैं कि इस अवधारणा के पीछे उद्देश्य क्या था। यह विभेद किसी सोची-समझी योजना के तहत किया गया (जैसाकि 'स्त्री विमर्श' के संदर्भ में कहा जाता है) या यह अनायास ही प्रचलन में आ गया और कुछ लोग स्वयं को चर्चित करने के उद्देश्य से इसे ले उड़े। स्पष्ट है ऐसा करने वाले लोग प्रवासी ही होंगे। लेकिन बड़ी संभावना यह है कि ऐसा 'आप्रवासी' लेखकों के लेखन को कम महत्वपूर्ण मानने के उद्देश्य से किया षडयंत्र लगता है। कुछ लोगों को दरकिनार करने के ऐसे षडयंत्र होते रहे हैं, होते रहते हैं और शायद होते रहेंगे। "साहित्य के साथ प्रवासी शब्द का प्रयोग मुझे गुलामी का अहसास करवाता है। अनुराग के मतानुसार "प्रवासी अप्रवासी के खांचे में साहित्य को बांटना घोर अपराध है। "9

डॉ. रामदरश मिश्र का मत है "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।"10

राजेन्द्र यादव ने हंस के मई 2007 के अंक में जो संपादकीय लिखा था उसमें तो यहाँ तक कह दिया था कि यह बीजेपी वाला साहित्य है जो आधुनिकता से शून्य है और जिसमें भारतीय साहित्यिक मुहावरे का नितांत अभाव है। राजेन्द्र यादव एक अर्से से प्रवासी साहित्य को 'नास्टालजिया' का साहित्य कहते रहे हैं।"11

"वरिष्ठ कहानीकार महीप सिंह जी ने बहुत ही प्यार से एक बात कही उनका कहना था, देखो भाई तेजेन्द्र अब यह प्रवासी शब्द स्थापित हो चुका है। यह उन लोगों द्वारा रचे गये। साहित्य की ओर इंगित करता है जो विदेश में रह कर साहित्य रचते हैं। अंग्रेज़ी में भी Diasporic Literature जैसी विधाओं की चर्चा रहती है। "12

तेजेन्द्र का भी मत है- " दरअसल यह एक षड़यन्त्र के अलावा और कुछ नहीं है। " 13 अर्चना पैन्यूली का कहना है कि "प्रवासी साहित्य की खेमेबाजी करने की जरूरत नहीं।

विदेशो में रह रहे हिंदी साहित्यकारों को इस विशेषण की आवश्यकता नहीं। "14

1949 में चीन में साम्यवादी क्रांति और तिब्बत में चीनी सेनाओं के हस्तक्षेप से उत्पन्न स्थिति के कारण दलाईलामा" के नेतृत्व में हजारों तिब्बतियों ने तिब्बत से पलायन कर भारत में प्रवेश किया था। विश्व के अन्य भागों में भी इस तरह की परिघटनाएँ देखने को मिलती है। प्रथम विश्वयुद्ध और विशेष रूप द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् यूरोप के कई देश (ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, रूस आदि) भी व्यापक पलायन और प्रवासी आगमन दौर से गुजरे हैं।

वास्तव में, विभिन्न चरणों में डायस्पोरा या प्रवासन का दौर दक्षिण अमेरिका उत्तरी अमेरिका, कैरेबियाई क्षेत्र, दक्षिण पूर्वी एशिया, अफ्रीका, मध्य यूरोप, दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्रों में विभिन्न कारणों से होता रहा है। यह भी कहा जा सकता है कि बीसवीं सदी में प्रथम विश्व (विकसित समृद्ध देश) और तीसरी दुनियां (विकासशील और निर्धन देश) के देशों के बीचबहुआयामी प्रवासन की लहरों ने मेजबान राष्ट्रो की आंतरिक और बाहरी संरचनाओ को भी प्रभावित किया है। एन. जयराम' लिखते हैं "नए तनावों, अन्तर्विरोधों और प्रतिस्पर्धाओं को प्रवासन ने जन्म दे दिया है। इसलिए प्रवासन के संबंध में और अधिक व्यापक दृष्टि अपनाए जाने की आवश्यकता है जो कि नए डायस्पोरा या प्रवासन के यर्थाथ को वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित कर सके।"15

विदेशी प्रवासी हिंदी साहित्य के लक्षण

डॉ. कृष्ण कुमार ने विदेशी प्रवासी साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएँ बतायी हैं-

1. अचल सम्पति के मालिक दीर्घकालिक प्रवासी हिंदी रचनाकार की रचनाएँ जोविदेशों में कम से कम 10 वर्षों से रह रहे हों। साहित्य को विभिन्न देशों के परिप्रेक्ष्य में

देखना चाहिए।

2. स्थानीय संस्कृति संस्कारों की झलक

3. स्थानीय रीति-रिवाज़ों की झलक

4. स्थानीय परिवेश एवं वातावरण का चित्रण / उल्लेख |

5. स्थानीय भाषा, मुहावरों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

6. स्थानीय खान-पान एवं रहन सहन का चित्रण|

7. स्थानीय सामाजिक मूल्यों एवं रिश्तों के समीकरणों की प्रस्तुति।

8. स्थानीय साहित्यकारों एवं साहित्य का उल्लेख।

9. देश विदेश के जीवन मानव मूल्यों का चित्रण|

10. परिवार, परिजन, परजन, प्रियजन, देश विछोह की पीड़ा का चित्रण।

11. देश विदेश परिवेश जनित भिन्नताओं का चित्रण।

12. देश विदेश मान्यताओं के टकराव का चित्रण "16

प्रमुख प्रवासी लेखक तेजेंद्र शर्मा का कहना है कि विदेशों में बैठकर लिखने वाले लेखकों को प्रवासी न कहा जाए। उन्होंने कहा कि उषा प्रियंवदा ने भारत में रहकर साहित्य की रचना की। बावजूद इसके उन्हें प्रवासी साहित्यकारों की श्रेणी में रखा जाता है। उन्होंने पूरे हिंदी साहित्य को प्रवासी बताया और कहा कि अमेरिका, कैनेडा तथा लंदन में लिखा जा रहा साहित्य मुख्यधारा का साहित्य है। विदेशों में युवा हिंदी नहीं जानते, जबकि भारत में भी नई पीढ़ी हिंदी से विमुख हो रही है।"17

डर है कहीं विदेशों में लिखा जाने वाला साहित्य खतम न हो जाए। या फिर साहित्य को बचाए रखने के लिए माइग्रेशन का सिलसिला यूं ही जारी रहेगा। उन्होंने आलोचकों से आह्वान किया कि वे पुराने हथियारों से उनके साहित्य का आंकलन न करें। प्रवासी जीवन का यथार्थ वापस लौटने के स्वप्न और न लौट पाने की बाध्यता के बीच दोहरेपन की मानसिकता होती है। अतीतानुराग की भावुकता से छुटकारा न पा सकने के कारण अपने वर्तमान कोअस्वीकार करने और अतीत में जीने की मानसिकता खुद उनके लिए जड़ता, विषमता और अलगाव पैदा करती है।

सुधीश पचौरी के अनुसार ‘‘प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है एक ही वक्त में दो दुनियाओं को पुकारता है। एक वह जिसमें डालर कमाने, विदेश पलट होने, अमीर होने के लिए वह परदेस में नाना कष्ट सहता अपने देश की याद करता रहता है। दूसरा वह जो याद आने वाले ‘देश’ के यथार्थ को भी जानता है जिससे उबकर वह ‘परदेश’ भागा था। परदेस में उसका ‘देश’ प्रेम जोर मारता है और देश में परदेस प्रेम। पूँजीवादी सभ्यता की मारकाट वाली स्पर्धा, हर वक्त की असुरक्षा, अकेलापन उसे डाॅलर देती है। कहीं न कहीं सभी प्रवासी अपनी मूल संस्कृति, मूल परम्परा और मानस से स्वभावतः या प्रकृतिजन्य रूप से जुड़े रहते हैं। यह जुड़ा रहना अवसरों, कुअवसरों पर बाहर भी झांकने लगता है। परम्परायें, रीति-रिवाज़, लोक जीवन में रची-बसी गहरी आकृतियां, मौसम-बेमौसम हमारे व्यवहार, हमारी स्मृति और हमारी पहचान को उकेरती रहती हैं। भाषा का इस एहसास से बड़ा सीमित सा रिश्ता रह जाता है। सिर्फ़ उन लोगों में भाषा इस एहसास का अहम् हिस्सा

बनती है जो काफी देर से, परिपक्वास्था में अपना परिवेश छोड़ कर यहां आ बसे। आधे मन से वह उसमें लगता है लेकिन वह यह भी चाहता है कि डालर रहे संग में अपना गाँव भी रहे तो मजा है। इस तरह प्रवासी भाव देश-परदेस के बीच विभाज्य भाव है।'18' प्रवासी भारतीयों की दोहरी मानसिकता के संदर्भ में दुर्गा प्रसाद गुप्त का मत है ''यह ऐसा भारतीय मन है जो एक तरफ भारत के आध्यात्मिक अतीत पर मुग्ध होता है, उसके लिए आहें भरता है तो दूसरी तरफ भौतिकता में उलझे उसके गरीब और पिछड़े वर्तमान पर आँसू बहाता है। उसके प्रति विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित करता है। - यह विभाजित मन उन प्रवासी भारतीयों का है जो न तो सही अर्थों में अपनी धर्म और संस्कृति के प्रति तटस्थ रह पाते हैं और न निर्वैक्तिक। फिर भी वे दोनों संस्कृतियों के प्रेमी आलोचक हैं।''19

श्यामा चरण दुबे के अनुसार ''ये वे लोग हैं जो विदेशों में भारतीय और भारत में विदेशी जीवन शैली और मूल्यों के साथ जीते हैं। उनकी जड़ें भारतीय परम्परा में नहीं होती, पर साथ ही उनका पश्चिमीकरण भी बहुत सतही स्तर वाला होता हे। वे पश्चिमी संस्कृति के बाह्य लक्षणों का अनुकरण करते हैं, पर गहराई में जाकर उसकी आत्मा से साक्षात्कार करने से कतराते हैं।"20 इस प्रकार के सम्मिलन से भिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा और साहित्य का जन्म होता है। हिंदी का प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करता है।

प्रवासन के कारण

विगत कुछ वर्षों से भारत में 2003 से प्रतिवर्ष जनवरी दिवस आयोजित किया जाता है। इसमें हजारों प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। प्रथम "प्रवासी दिवस" होने से लेकर आजतक मैं यह कह सकती हूँ कि भारतीय मूल के प्रवासी डायस्पोरा, और अप्रवासी भारतीय डायस्पोरा, दोनो की आकांक्षाएँ, महत्वाकांक्षाएँ और गृहराष्ट्र भारत से अपेक्षाएँ भिन्न थी ।' दोनों की अलग परिधानों और आचार - - अलग पहचाने भी उनकी दैहिक मुद्राओं, विचारों में प्रतिबिम्बित हो रही थी।

इसलिए इस महायात्रा में समय - समय पर नए - नए आयाम जुडते रहे हैं। चूंकि इस यात्रा का कोई अन्तिम गंतव्य स्थान (देश, नगर, महानगर, गाँव) नहीं होता है इसलिए इसके प्रकार भी अंतिम नहीं होते है ।"21

फिर समय काल व परिस्थितियाँ बदली, प्रवासी मन साहित्य की ओर उन्मुख हुआ। भाषा व संस्कारों का भारतीय मोह हिन्दी के प्रति बढ़ता गया। उल्लेखनीय है कि आज जिस हिन्दी भाषा को विश्व के दो सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है उसका सार्थक रूप तो हमारे इन गिरमिटियाँ मजदूरों के श्रीयश का ही परिणाम है। इन प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी भाषा की एवं सांस्कृतिक अस्तित्व की रक्षा हेतु जो कुछ किया वह इतिहास की धरोहर है। विदेश यात्रा के समय भाषा के नाम पर "रामचरित मानस की कुछ चौपाइयाँ, हनुमान चालीसा, सत्यनारायण कथा की एक प्रति से अधिक उनके पास कुछ नहीं था किसी मजदूर को बालकाण्ड कण्ठस्थ था तो कुछ को सुन्दरकाण्ड इन्होंने इन काव्यअंशो को लेखनी बद्ध किया और इस खण्डित रामायण के आधार पर बच्चों को हिन्दी भाषा का ज्ञान कराया ।"22

इन मजदूरों पर अंग्रेजी शासन विदेशी प्लांटर या ईसाई प्रचारकों का बहुत अधिक दबाव पड़ा किन्तु इनमें से अधिकांश ने अपनी भाषा या संस्कृति को नहीं छोड़ा। जिन विपरीत परिस्थितियों ने इन प्रवासी भारतीयों ने हिन्दी भाषा या भारतीय जीवन पद्धति की रक्षा की। वह सांस्कृतिक जिजीविषा का बेजोड़ उदाहरण है। "गत शताब्दी और वर्तमान शताब्दी में रोजी रोटी की तलाश में कुली और व्यापारी बनकर भारत से बाहर गए । येभोले-भाले भारतीय अपने साथ अपने देश की संस्कृति और धर्म भी ले गए जिसे लेकर और संघर्ष के दौरान भी अपनी भाषा को सुरक्षित रखा।"23

मारीशस के "अभिमन्यु अनत" का कथा साहित्य हो या "रामदेव धुरन्धर" की कहानियाँ या फिर "प. लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी रसपुंज की कविताएँ साहित्य की हर विधा में, केवल रसात्मक अपितु संवेदनात्मक अनुभूतियों को भी छूती हैं, उनकी कविताएँ भारतीय मजदूरों के कष्टों के वर्णन से भरी रहती थी।" द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के समय जो स्मारिका निकली उसमें इन प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई थी। इन्होंने जो साहित्य राशि तैयार की वह न केवल भारतीय संस्कृति आदि के पक्ष में ही नहीं बल्कि अंग्रेजी, हिन्दी और फ्रेंच में भी उसके लिए भारत सदैव ऋणी होगा।"24

विशेषतः अभिमन्यु अनत के उपन्यास उल्लेखनीय हैं जिनके प्रवासी सन्दर्भ विविध रूपों में दिखलाई पड़ते हैं। "लाल पसीना, आन्दोलन, जमगया सूरज, एक बीघा प्यार, तपती दुपहरी, खामोशी के चीत्कार (कहानियाँ). नागफनी में उलझी साँसे (कविता संग्रह) आदि साहित्य की विपुल राशि कही जा सकती है। "अभिमन्यु जी के उपन्यास देश और काल की सीमाओं में बंधी मानवीय पीड़ा को मुक्त करके साधारणीकरण, की जिस उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित कर चुके हैं, वह उनके रचनाकार की ही नहीं, समूचे हिन्दी कथा साहित्य की एक उपलब्धि मानी जाएगी।"25

प. तोताराम सनाढ्य, प. कमला प्रसाद मिश्र की कहानियाँ (भूली हुई कहानियाँ, मुल्की की रचनाएँ (कविता संग्रह) हैं जिसमें प्रवासी भारतीयों के यथार्थ के साथ-साथ विदेश में पनपी सांस्कृतिक विषमताओं का निरूपण हुआ है। इस संदर्भ में कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य

"एक सौ साल हुए जब भारत से मजदूर यहाँ पर आए

आज से फिजी है देश हमारा इसी अरमान के ऊपर आए। "26

कुछ ऐसा ही भाव "प्रो. जे. एस. कमल की रचनाओं में मेरा देश, मेरे लोग, सबेरा, धरती मेरी माता, करवट आदि में नजर आता है। 'मेरा देश, मेरे लोग पुस्तक में लेखक ने फीजी देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य का वर्णन किया है। इसी प्रकार “सवेरा" उपन्यास में फिजी के प्रवासी भारतीयों के प्रारम्भिक संघर्ष का दस्तावेज है। सूरीनाम के साहित्यिकारों में मुंशी

रहमान खाँ, देवनारायण श्री हैं तो त्रिनिदाद के साहित्यकारों में छोटकनलाल, एस.एच. आदेश प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने अपनी साहित्य श्री से हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के साथ प्रवासी जीवन को बड़ी बारिकी से उठाया है।

साहित्य की उपादेयता के रूप में इन विदेशी प्रवासी साहित्यकारों की साहित्यिक संवेदनाओं को कदापि नहीं भुलाया जा सकता क्योंकि भावों की तरलता व स्थिति परिस्थितियों का जो विशुद्ध आकलन इनके लेखन में मिलता है, वह यथार्थ की तपती धूप में लिखा गया था, जिसको पढ़कर हम उन देशों की न केवल भौगोलिक यात्रा करते हैं, बल्कि भारतीयों के सामाजिक व सांस्कृतिक योगदान के साथ-साथ प्रवासी परिस्थितियों, एवं समस्याओं से भी रूबरू होते हैं।

व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा आर्थिक लाभ लेने के लिए या कहे उच्चतम जीवन शैली के लिए, विदेश में प्रवास करता है वहाँ अपने आप को स्थापित कर भी लेता है। किन्तु उसके जाने फिर वापिस आने, विदेश में बस जाने के बावजूद उसका मन भारतीयता के प्रति अपने देश के प्रति या अपने परिवार के उन्मुख तो रहता ही है, वह नहीं भूल पाता है, कुछ ऐसी ही विषम परिस्थितियों, अकेलेपन की जिन्दगी, अपनों की कमी, आर्थिक मजबूरियों के बीच गमन आदि को उपन्यासकारों ने मनोवैज्ञानिक स्थिति पर उतारा है, जो न केवल उस भोगे यथार्थ का रेखांकन है, अपितु उसके मन की अशान्त वृत्ति के बीच झूलते प्रवासी परिस्थितियों को निरूपित करता है। "वे दिन" की रचना प्रक्रिया में "निर्मल वर्मा" ने ऐसे ही उद्गार व्यक्त किए हैं बरसों बाद जब मैं अपने देश लौटा तो मुझे लगा जैसे मेरे देखने, - सुनने या अनुभव करने का यंत्र भीतर ही भीतर बदल गया।'

ऐसा ही भाव “अन्या से अनन्या' की 'प्रभा' व्यक्त करती है, "मुझे नहीं रहना इस विदेश में जहाँ अपना कोई भी ना हो।"

आधुनिक उपन्यासकारों ने अपने-अपने भावस्तर पर इस विषय पर लिखा है। इन उपन्यासों में कहीं बूढे माँ-बाप का दर्द तो हीं परित्यक्ता पत्नी की मूक वेदना नजर आती है "यह सामाजिक सच्चाई है कि बड़े शहरों के बड़े परिवारों में ऐसा अभ्यास होता रहता है. बच्चे पढ़ लिखकर

विदेश में बस जाते हैं, माँ-बाप बेचारे, महानगरों में अपनी यादों का या अपनी बूढी मजबूरियों का, आँसुओं के साथ जीते हैं।"

"समय- सरगम" के ईशान हो या अरण्या या फिर गिलिगुडु के कर्नल स्वामी या बाबू जसवन्त सिंह या फिर शेष कादम्बरी की रूबी दी के पुत्र आदि पात्र, अपनी इसी कारूणिक स्थितियों को जीते नजर आते हैं।

भारतीय साहित्यकारों में "गिरिराज किशोर का पहला गिरमिटिया, नरेन्द्र भल्ला का 'दो देश तीसरी उदासी, रामदेव धुरन्धर का 'पूछो इस माटी से, प्रभा खेतान का 'आओ पेपे घर चले, मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब', मैत्रेयी देवी का 'अनजाना देश', उषा प्रियवन्दा का 'शेषयात्रा, अन्तर्वशी, मृणाल पाण्डे का 'हमको दिया परदेस', अर्चना पैन्यूली का वेयर इू आई बिलोंग, आदि आदि उपन्यास प्रवासी जीवन की विविध समस्याओं एवं परिस्थितियों को रखांकित करते हैं।

साहित्य के अन्य रूपों में भी, प्रवासी भारतीयों की रचनाएँ देखने को मिलती है। जिसमें कविता, कहानियाँ, लौकिक साहित्य (मॉरिशस) प्रमुख है। किन्तु वर्तमान में प्रवासी सन्दर्भों को लेकर जो साहित्य मिलता है उसमें यात्रावृत्त व संस्मरणों का विशेष प्रभाव नजर आता है, जिनमें यात्रा के साथ-साथ वहाँ के भोगे गये यथार्थ व सामाजिक समस्याओं का जिक्र होता है। चाहे वह कुछ महीनों या सालों का ही क्यों न हो। "डॉ. जनार्दन प्रसाद अग्रवाल" अपनी पुस्तक "अफ्रीका में मेरे 31 साल" में लिखते हैं "मुझे किवी में चार दिन भूखा ही रहना पड़ा क्योंकि वहाँ के जानवरों के माँस व मछलियों के अलावा खाने में केवल फल ही मिलते थे किवी में ब्रेड तकउपलब्ध नहीं थी वरना इतनी पेरशानी नहीं होती ये तो अफ्रीका के शुरूआती दिनों थे किन्तु बाद में उन्होंने अपने सकारात्मक नकरात्मक पहलुओं को है । पुस्तक में उकेरा जो प्रवासी सन्दर्भों को बखूबी रेखांकित करता है।"27

पूर्व गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे ने कहानी विदेश यात्राओं की" में प्रवासी सन्दर्भों को संस्मरणात्मक रूप में पिरोया है "हमें खान-पान के - मामले में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना था। यूरोपीय खाने में न तो मसाले की सब्जियाँ होती है, न उसमें मिर्च वगैरह होती है सिर्फ उबला हुआ खाना महीनों तक खाना असंभव सा लगता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विदेश गमन में आरम्भिक परेशानियाँ, भोजन, भाषा, आवास व विदेशी मुद्रा की होती है। सुदूर देशों में बढ़ता अकेलापन, काम के बोझ तले थकान, नर्वसता, अपनों की यादें कितनी ही ऐसी व्यंजनाएँ है जो प्रवासी मन को सताती रहती है।

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, "देस परदेस में लिखते हैं, "जब हम देश से बाहर होते हैं तो देश की सबसे ज्यादा याद आती है। अगर हम जैसे अस्थायी प्रवासियों को आती है तो कोई कारण नहीं है कि उन्हें न आए जो रोजी रोटी के लिए स्थायी रूप से यहाँ आ बसे हैं।28

डॉ. नमिता सिंह ठीक ही लिखती हैं अपनी जड़ो की तलाश में सामाजिक, मूल्यगत सहअस्तित्ववादी दर्शन में संस्कारित प्रवासी पुनः अपनी धरती पर दबी छुपी आशा-आकांक्षा के साथ पहुँचता है, तो वह दिग्भ्रमितहोता है। दिपवान विफल की तरह यहां सब कुछ बदला हुआ पाता है, प्रवासी भारतीय के लिए यह निरन्तर द्वन्द्वात्मक स्थिति में जीना ही जैसे नियति है।"29

सर्वप्रथम प्रवासी भाव हमें महाभारत युग में नजर आतें हैं, जब युद्ध के पश्चात् मानवीय जाति यहाँ से वहाँ बढ़ती चली गयी 'डॉ. कैलाश कुमारी सहाय' के अनुसार "कौरव पाण्डवों का युद्ध नहीं बल्कि भारतीयों की प्रवासी श्रृंखला की भूमिका थी। प्रवासियों का अभ्युदय का एक संकेत था । इसी महाभारत के बाद प्रवासियों का जन्म हुआ।' तदुपरान्त भारत से निकले प्रवासी भारतीयों ने फारस से लेकर यूरोप तक के देशों में प्रवास किया।"30

श्री बनारसी दास चतुर्वेदी 'प्रवासी भारतवासी में लिखते हैं "ऐसा विश्वास है कि भारत से जाकर भारतीयों ने सर्वप्रथम मिस्र देश में शरण ली। अनुमानतः आज से सात या आठ हजार वर्ष पूर्व भारतीय मिस्र देश के प्रवासी बने भारतीय स्वेज के मुहाने को पार कर, विदेशों में गये और कील के तटवर्ती देशों में प्रवास किया।"31

बौद्ध काल में भी मिक्षु और भिक्षुणियों के पूर्व और मध्य एशिया में जाने के सबल प्रमाण मिलते हैं। सुदूर पूर्व में फैली महाभारत और जातक कथाएँ और मध्य एरिया में लगभग अफ्रीका तक फैली भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ प्रमाणित करती है कि दीर्घ काल से ही भारतीय प्रवास के लिए विदेशों में जाते रहे हैं और कालान्तर में अनेक भारतीय वहीं पर बस गए।

साम्राज्यवादी दौर से आधुनिक डायस्पोरा का काल शुरू हुआ। ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा भारतीयों को अनुबंधित मजदूरों के रूप में विभिन्न देशों में काम करने के लिए ले जाया गया। इसमें सूरीनाम, मलेशिया, बर्मा, फिजी, गायना, त्रिनिदाद, द. अफ्रीका मॉरीशस प्रमुख हैं। अनुबंधित मजदूरों के अतिरिक्त भारतीयों ने ब्रिटेन के लिए युद्धों में भी सैनिकों की तरह लड़ाई में भाग लिया। इसमें बोर युद्ध व दोनों विश्वयुद्ध शामिल हैं। वीं सदी के आरम्भ में अनेक गुजराती बड़ी संख्या में व्यापार करने पूर्वी अफ्रीका पहुँचे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारतीय दुनिया के अनेक देशों में बिरखने लगे। युद्ध के बाद यूरोप के पुनः निर्माण की प्रक्रिया में भारतीयों का बड़ा योगदान रहा है। आज भारतीयों ने आस्ट्रेलिया, यूरोप, कनाडा और अमेरिका जैसे देशों में अपनी छाप छोड़ी है।

संदर्भ

1-एशियास फ्लोया इवेल्युएटिंग डायस्पोरा वियार्ड एर्नाथसिटी,एशियास फ्लोया, वॉल्यूम 32, पृ. सं. - 557,1998

2- थ्योराइजिगं डायस्पोरा, जाना इंवास बाजिएल एण्ड अनीता मनुआर, पेज न. 77,संस्करण2002।

3- द इण्डियन डायस्पोरा डायनामिक्स ऑफ माइग्रेशन, सम्पादकः एन जयराम पृ. सं. 25

4-www.shree-prakashan.com Id: editorimej2011@gmail.com, Vol-5, Issue-8, Aug-2016. Page 61,लेखक -उत्तम पटेल,अभिगमन तिथि 7नवम्बर2022।

5-विद्वानों का हिंदी प्रेम, जगदीश प्रसाद, पृष्ठ-13 मेधा बुक्स नई दिल्ली संस्करण 2005

6-वही, पृष्ठ -47

7-हिन्दी का प्रवासी साहित्य खण्ड-3 (कहानी) संपादक गोयन का कमल किशोर, यश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या-21

8-www.shree-prakashan.com Id: editorimej2011@gmail.com, Vol-5, Issue-8, Aug-2016. Page 61,लेखक -उत्तम पटेल,अभिगमन तिथि 28 नवम्बर2022।

9-प्रसंगवश, रूपसिंह चंदेल, पृष्ठ 12, प्रकाशन इंडिया नेट बुक्स नई दिल्ली, संस्करण 2021

10-मूल्य और मूल्य संक्रमण (रामदरश मिश्र के उपन्यासों के संदर्भ में ले॰ डॉ॰ विनीता राय, पृष्ठ-17 अनिल प्रकाशन इलाहाबाद संस्करण (1999)

11-हंस पत्रिका, सम्पादक राजेन्द्र यादव,मई,2007 का सम्पादकीय

12- पुरवाई पत्रिका, सम्पादकीय-तेजेन्द्र शर्मा, ब्रिटेन,अभिगमन तिथि17दिसम्बर 2022

13-वही

14-वेयर इू आई बिलांग, अर्चना पैन्यूली, भूमिका से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली।

15-: प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य,वर्मा विमलेश कान्ति पृष्ठ-29, प्रकाशक भारतीय ज्ञान पीठ लोधी रोड, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2016 |

16- भाषा साहित्य और राष्ट्रीयता, डॉ कृष्ण कुमार, पृष्ठ 31 : सस्ता साहित्य मंडल,नईदिल्ली,संस्करण-2011

17- पुरवाई पत्रिका, सम्पादकीय-तेजेन्द्र शर्मा, ब्रिटेन,अभिगमन तिथि17दिसम्बर 2022

18- उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श,सुधीश पचौरी, पृष्ठ 72,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली , तृतीय संस्करण 1जनवरी 2010।

19- हिन्दी भाषा स्वरुप शिक्षण वैश्विकता, संपादक,डा॰ कमलकिशोर गोयनका, पृष्ठ 88, भारतीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली संस्करण-2005।

20-वही, पृष्ठ 127

21-विभिन्न सम्मेलनों की रिपोर्ट से उद्धरित (यथा-विश्व हिंदी सम्मेलन इत्यादि भारत सरकार के राज्य पत्र में पृष्ठ संख्या 17 पर उल्लेखित)

22- मॉरिशस की संस्कृति और साहित्य,डॉ. उदयनारायण गंगू,पृष्ठ 36, प्रकाशन यश पब्लिकेशन्स दिल्ली, प्रथम - संस्करण - 2017.

23-वही, पृष्ठ -37

24-प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा, कैलाश कुमारी सहाय, पृ. स. - 12, अविराम प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 1974

25-विश्व हिन्दी दर्शन, (विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रकाशित पत्रिका), नागपुर, पृ. स. 17 स्मारिका - द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन, पृ. स. 87

26-प्रवासी भारतीयो की हिन्दी सेवा, कैलाश कुमारी सहाय पृ. स. 226,अविराम प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 1974

27-वही, पृष्ठ,53

28-देस परदेस, दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, पृ. स. 49, हिंदी बुक सेंटर,संस्करण,2012।

29-भारतीय डायसपोरा; विविध आयाम डॉ रामचरण जोशी पृष्ठ 54, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2014

30-'प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा, डा कैलाश कुमारी सहाय, पृ. स. 25, अविराम प्रकाशन,नई दिल्ली संस्करण 1974

31-बनारसी दास चतुर्वेदी; व्यक्तित्व और कृतित्व कालीचरण स्नेही से उद्धृत, प्रवासी भारतवासी एक भारतीय हृदय- प्रथम खण्ड-, पृ. स. 18-19, आराधना ब्रदर्स,संस्करण द्वितीय,1997

Corresponding Author
*डॉ. प्रणु शुक्ला
सहायक आचार्य, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)
Email-pranu.rc55@Gmail.com, Mobile-7597784917